अनुक्रमणिका

अङ्कानाम	छन्दसङ्ख्या	अङ्कानाम	छन्दसङ्ख्या
१ ऋषभदेवकीस्तुति	१ ता ४	२१ कर्तव्यशिक्षाकथन	४४ ता ४५
२ चन्द्राभप्रभुकीस्तुति	५	२२ देवलक्षणकथन	४६
३ शान्तनाथकीस्तुति	६	२३ यज्ञविषै जीव होम निषेध	४७
४ नेमिनाथकीस्तुति	७		
५ पार्श्वनाथकीस्तुति	८	२४ सातोंवारगर्भितषट् कर्म उपदेश	४८ ता ४९
६ महावीरकीस्तुति	९ ता १०		
७ सिद्धोंकीस्तुति	११ ता १२	२५ सम विसम कथन	५० ता ६२
८ साधुपरमेष्ठी	१३	२६ कुकवि निन्दा कथन	६४ ता ६५
९ जिनवाणीकोनमस्कार	१४ ता १५	२७ विधाता सों तर्क कर कुकविनिन्दा	६६
१० जिनवाणीऔरपरवाणीअन्तरकथन	१६	२८ मनरूप हस्ती वर्णन	६७
		२९ गुरुउपकारकथन	६८
११ ज्ञानी की भावना कथन	१७	३० चारों कषाय जीतन उपाय	६९
१२ राग वैराग अन्तर कथन	१८	३१ मिष्टवचनबोलनउपदेश	७०
		३२ धैर्य धारण शिक्षा	७१
१३ भोगनिषेधकथन	१९	३३ होनहारदुर्निवारकथन	७२
१४ देहनिरूपणकथन	२०	३४ काल सामर्थ कथन	७३
१५ संसारदशानिरूपण	२१ ता २४	३५ अज्ञानीजीवकेदुःखका कथन	७४
१६ शिष्यउपदेशकथन	२५ ता ३१		
१७ संसारीजीवकथन	३२ ता ३३	३६ धैर्यधारणशिक्षा	७५
१८ अभिमाननिषेध	३४ ता ३६	३७ आशानामनदीवर्णन	७६
१९ निजव्योहारअवस्था कथन	३७	३८ महामूढवर्णन	७७ ता ७८
		३९ दुष्ट जीव वर्णन	७९
२० वृद्धदशाकथन	३८ ता ४३	४० विधातासोंवितर्ककथन	८०

अनुक्रमणिका

अङ्कानाम	छन्दसङ्ख्या	अङ्कानाम	छन्दसङ्ख्या
४१ चौबीसों तीर्थङ्करों के चिन्हवर्णन	८१	४८ सुबुद्धिसखीप्रतिबचन	८८
४२ ऋषभदेव के पूर्वभव कथन	८२	४९ गुजरातीभाषामेंशिक्षा	८९
४३ चन्द्रप्रभुस्वामीके पूर्व भवकथन	८३	५० द्रव्यलिङ्गीमुनिनिरूपण	९०
४४ शान्तिनाथ के पूर्वभव कथन	८४	५१ अनुभव प्रशंसा	९१
४५ नेमिनाथ के पूर्व भव कथन	८५	५२ भगवानसों वीनती	९२
४६ पार्श्वनाथ के पूर्व भव कथन	८६	५३ जैनमतप्रशंसा	९३ता१०५
४७ राजायशोधरकेपूर्वभव कथन	८७	५४ जैन शतक रचने वा कवि का हाल	१०६
		५५ जैन शतक के संपूर्ण होने का सम्वत् महीना तिथि वार	

निवेदन

विद्वज्जनों को विदितहो कि जैनशतक की काव्योंमें जो ऐसा . चिन्ह देखोगे वह पिङ्गल की रीतिसे जहांजहां वर्ण वा मात्राओं की गिन्ती पर विश्राम है तहां तहां कर दिया है। यह चिन्ह छन्द बांचने में अति सहायक होगा पद वा शब्द वा वाक्य के अनुकूल नहीं किया है जैसा अङ्ग्रेजों में होता है ॥

चमनसिंह